thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४ अंक ११ १० नवम्बर २०१४

बलिदान दिवस समारोह (२४, २५ व २६ नवम्बर २०१४) पर

धर्मवीर हुतात्मा वेदप्रकाशजी (गुंजोटी) को

शत् शत् अभिवादन व सविनय श्रद्धांजलि !

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानी

दत्तात्रयजी (उमरी), राधाकृष्णजी (निजामाबाद), भाई श्यामलालजी (उदगीर), विष्णु भगवानदासजी (ताण्डूर), शिवचन्दजी (हुमनाबाद) तथा मृत्युशय्या पर वेदप्रकाशजी (गुंजोटी) ।

समझा है खेल शहीदों ने, अपना सर्वस्व लुटा देना ।

वीरों का यह मनोरंजन, अपना अस्तित्व मिटा देना ।।

thearyasamaj.org

सभांतर्गत 'पर्जन्य वृष्टि यज्ञ' का सफल आयोजन

परली आर्य समाज में वृष्टिविशेषज्ञ डॉ. कमलनारायणजी आचार्य के ब्रह्मत्व में आयोजित पर्जन्य वृष्टि यज्ञ का दृश्य । मन्त्रपाठ करते हुए आचार्यजी एवं श्रद्धानन्द गुरूकुल के ब्रह्मचारी व अध्यापकवृन्द ।

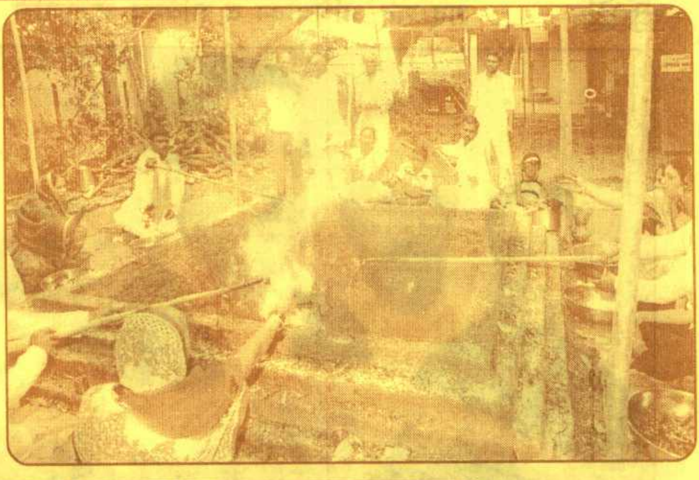

यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुए यजमान दम्पती ।

सम्भाजीनगर(औ.बाद) में आयोजित पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में सश्रद्ध आहुतियां देते हुए यजमान । साथ मे यज्ञ के संयोजक श्री दयारामजी बसैये।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९० कार्तिक १० नवम्बबर २०१४

प्रधान सम्पादक
माधवराव देशपांडे
(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२१९५१९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्..४
२) श्रुतिसन्देश/ सभा बैठक सूचना....................................५
३) यज्ञ का सार - आत्मिक व भौतिक लाभ..........................६
४) रक्तसाक्षी पं. वेदप्रकाशजी (कविता) ८
५) भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें.......................................९
६) आर्य बलिदानी पं. वेदप्रकाशजी १२
७) संसद में डॉ.सत्यपाल सिंहजी का भाषण.........................१४
८) समाचार दर्पण...१६

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी..........................१९
२) सुभाषित रसास्वादः/ सभा-सूचना..............................२०
३) क्रांतिकारी आर्य समाज-गुंजोटी..................................२१
४) गाथा वाचू दयानंदांची..२७
५) आर्य समाज-स्थापना वार्ता..२९
५) वार्ता विशेष..३१
६) शोकवार्ता...३३

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

कट्टर साम्प्रदायिकता- विघातक

आजकल देश में जाति व सम्प्रदायों के आधारपर राजनैतिक दल बढते जा रहे हैं । सबसे बडी समस्या तो इन शक्तियों द्वारा उत्पन्न होनेवाले कट्टरतावाद को रोकने की है । एक ओर हिन्दू व हिन्दुत्व का राग आलापा जा रहा है, तो दूसरी ओर इस्लाम, इसाइयत आदि की आवाज बुलन्द हो रही है । भाजपा के प्रेरक रा.स्व.संघ के शीर्षस्थ नेतागण आज भी हिन्दूराष्ट्र की बात करते हैं और साथ ही राम मन्दिर का मुद्दा उठा रहे हैं । परिणाम स्वरूप अन्य मत-पन्थों के राजनैतिक दल भी उतनी ही शक्ति के साथ उभरते नजर आ रहे हैं । हैदराबाद के कट्टर साम्प्रदायिक दल एम.आई.M. (मजलिसे इत्तेहादूल मुसलमीन) भी इसी का ताजा उदाहरण है । जैसे पहले रा.स्व.संघ, शिवसेना, बजरंग दल, विहिंप आदियों ने स्वयं को हिन्दुओं का संगठन व राजनैतिक दल के रूप में घोषित किया, वैसे ही एम.आई.एम.ने भी अब स्वयं की पहचान मुसलमानों के राजनैतिक दल के रूप में बनाना शुरू की है । इससे देश के मुसलमान बडी संख्या में इस दल की ओर आकृष्ट हो रहे हैं । एम.आई.एम. यह कोई नया संगठन नहीं है । इसकी स्थापना हैदराबाद एक्शन से पहले रजाकारों के प्रमुख कासिम रझवी ने की थी । उस समय इसका प्रभाव कुछ अंशों तक ही रहा होगा, किन्तु अब यह दल पुनः बढते नजर आ रहा है । हाल ही के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में इस दल के २ विधायक चुनकर आये हैं और १४ उम्मीदवार दूसरे स्थानों पर रहे हैं ।

इन घटनाओं से साफ होता है कि अब देश में साम्प्रदायिक लोग राजनैतिक दलों के माध्यम से अपना स्वतंत्र अस्तित्व व शक्ति बढ़ाने में संलग्न हैं । हिंदू हो या मुसलमान ! दोनों कट्टरता के दायरे में आ रहे हैं । दोनों तरफ से दिये जानेवाले प्रक्षोभक वक्तव्यों से सामान्य लोगों का जीना दुष्कर होता जा रहा है । क्या इनसे देश में शान्ति, सौहार्द व खुशहाली का वातावरण बना रहेगा ? कभी नहीं ! यह प्रदूषित वातावरण तभी समाप्त होगा, जब हम सब मिलकर मानवता के पक्षधर बनेंगें और साम्प्रदायिक संकीर्णता को छोडकर नेक इन्सान के रूप में एक दूसरे से मित्रवत् स्नेहशीलता बढाते रहेंगें । इसके लिए आशा की एकमात्र किरण हैं महर्षि दयानन्द के वेदप्रतिपादित वैदिक विचार । [illegible] समय रहते उपरोक्त साम्प्रदायिक नेता यदि देशहित में अपनी कट्टरता को छोडकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर आस्था जतायेंगें, तो यह देश भविष्य में होनेवाले विध्वंसकारी घटनाओं से बच सकता है । इस दृष्टि से हमारे प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी देशवासियों को मानवीय मूल्यों का आश्रय प्रदान करेंगें, तो देश हम सबका भविष्य शान्तिप्रद होगा ।

-डॉ.नयनकुमार आचार्य

thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

क्षणभंगुर-असार संसार

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत् किलासथ यत् सनवथ पूरूषम् ।। (यजु. १२/७९)

अन्वयार्थ - हे मनुष्यों ! औषधियों के समान (यत्) जिस कारण (वः) तुम्हारा (अश्वत्थे) कल रहे या न रहे, ऐसे शरीर में (निषदनम्) निवास है । और (वः) तुम्हारा (पर्णे) कमल के पते पर जल के समान चलायमान संसार में ईश्वर ने (वसतिः) निवास (कृता) किया है । इससे (गोभाजः) पृथिवी को सेवन करते हुए (किल) ही (पूरूषम्) अन्न आदि से पूर्ण पुरूष को (सनवथ) औषधि देकर सेवन करो और सुख को प्राप्त होते हुए (इत्) इस संसार में (असथ) रहो ।

भावार्थ - मनुष्य को ऐसा विचरना चाहिए कि हमारे शरीर अनित्य और स्थिति चलायमान है, इससे शरीर को रोगों से बचाकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्षका अनुष्ठान शीघ्र करके अनित्य साधनों से नित्य मोक्ष के नित्य सुख को प्राप्त होवें । जैसे औषधि, तृण आदि फल, फूल, पत्ते, स्कन्ध और शाखा आदि से शोभित होते हैं, वैसे ही रोगों से रहित शोभायमान हों । **(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)**

॥ ओ३म् ॥

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की **अन्तरंग व साधारण सभा बैठक**

मंगलवार दि. २५ नवम्बर २०१४

स्थान- आर्य समाज गुंजोटी ता. उमरगा जि.धाराशिव (उस्मानाबाद)

* सूचना व निवेदन *

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग व साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उनकी बैठकें निम्न निर्देशित तिथि व समयानुसार सम्पन्न होंगे

* अन्तरंग सभा बैठक - मंगलवार दि.२५/११/२०१४ - प्रातः. ११ बजे
* साधारण सभा बैठक - मंगलवार दि.२५/११/२०१४ - दोपहरः. २ बजे

विशेष- १) सभा के अन्तरंग व साधारण सदस्य भाग लेंवें ।
२) बैठकों आते समय प्रत्येक प्रतिनिधि अपने पासपोर्ट साईज के फोटो साथ ले आवे । (सभा का परिचयपत्र तयार करने हेतु ।)

सूचना - गुंजोटी यह गांव सोलापूर-हैदराबाद राष्ट्रीय महामार्गपर स्थित उमरगा से केवल ५ कि.मी. अंतरपर है ।

-* निवेदक *-

डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ	माधवराव देशपांडे	उग्रसेन राठौर
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

एवं सभी पदाधिकारी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज परली-वै.

thearyasamaj.org

यज्ञ का सार- आत्मिक व भौतिक लाभ

– पं. उम्मेदसिंह विशारद

यज्ञ यह एक अद्‌भूत शब्द है । इस शब्द में जो विचार भरा है, वह ऐसा विलक्षण विचार है कि जो संसार की किसी विचारधारा में नही पाया जाता है । **यज्ञ** शब्द का अर्थ यह भौतिक या बाह्य यज्ञ नहीं है । इसका अर्थ आध्यात्मिक एवं आन्तरिक यज्ञ है ।

याजिक को व्यक्तिगत पारिवारिक व सामाजिक, भौतिक लाभ पीछे स्वयं में प्राप्त होने लगते हैं । बाहरी **यज्ञ** तो प्रतीक मात्र पर्यावरण शुद्धि, वेदमंत्रों की रक्षा एवं सात्विक वृत्ति द्वारा धर्म को स्थिर रखने का उपक्रम मात्र है । इससे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है । वास्तविक फलदायक यज्ञ तो वह होता है, जो मन के भीतर हो रहा है । असली यज्ञ भीतर होना चाहिए तथा बाहर व भीतर के यज्ञ में एकरूपता होनी चाहिए ।

यजुर्वेद में लिखा है कि **यज्ञेन यज्ञं अजयन्त देवाः**। अर्थात् विद्वान लोग यज्ञ से यज्ञ को उत्पन्न करते हैं । बाहर के यज्ञ में आग की लपटें उठ रहीं हैं । हमारे भीतर भी उपर उठने की लपट पैदा हो । हमारे भीतर आंत्मिक ज्योति का प्रकाश हो । हमारे भीतर भी मन कितना ही हमें पतन की तरफ ले जाने का यत्न करें, हम पतन के मार्ग का अवलम्बन न करें । बाहर जो यज्ञ हो रहा है, वही भीतर भी होना चाहिए । यज्ञ सिर्फ हवन करने का नाम नहीं है । यह सृष्टिचक्र को श्रेय (कल्याण मार्ग) की तरफ ले जाने का एक मूल सिद्धान्त है । प्राणिमात्र यज्ञ के सिद्धांत पर चलेंगें, तो सबका कल्याण होगा, न चलेंगे तो सृष्टिचक्र बौखल जायेगा । सृष्टि में कहीं शान्ति नहीं मिलेगी । सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जड एवं चेतन तत्व निरन्तर परोपकार यज्ञ कर रहे हैं और सभी तत्व एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक हैं और ब्रह्माण्ड को स्थिर रखने और सृष्टि क्रम को यथावत् देवत्व देने का यज्ञ कर रहे हैं ।

यज्ञ का सार

महाराजा जनक बहुत बडा यज्ञ कर रहे थे । उस अवसर पर ऋषि उद्यालकजी ने राजा जनक से निम्न प्रश्न पूछे,जिनका विश्लेषण इस प्रकार से हैं ।–

१) किं स्विद् यज्ञस्य आत्मा ?

– स्वाहा यज्ञस्य आत्मा ।

यज्ञ की आत्मा स्वाहा है और स्वाहा का प्रयोग वैयक्तिक,आध्यात्मिक व सामाजिक व्यवहार में निरन्तर किया जाता है । **स्वाहा** शब्द का व्यवहारिक अर्थ है, कि जैसे मनुष्य अपने में सोचता है, वैसा ही व्यवहार करता हैं ।

प्रथम यज्ञ में जो हम आहुति प्रदान

thearyasamaj.org

करते हैं, वह उस मन्त्र के अर्थ के अनुकूल अपने हृदय से स्वाहा करके डालनी चाहिए तथा संसार में व्यवहारिक जगत् में जो हम एक दूसरे से व्यवहार करते हैं, वह सात्विक निःस्वार्थ परोपकारिक होना चाहिए। प्रत्येक कार्य को परहित भावना में करना चाहिए। सुबह में रात्रि सोने के समय तक जो विचार हम मस्तिष्क से सोचते रहते हैं। अर्थात् शरीर रूपी यज्ञ कुण्ड में विचारों की आहुति देते रहते हैं। वह भी सात्विक व परोपकारिक, द्वेषरहित विचारों की होनी चाहिए। यदि उक्त विचारों में हम सही हैं, तो समझिये हमारा यज्ञ शुद्ध हो रहा है। अतः सृष्टिक्रमानुसार ईश्वर जैसे निःस्वार्थ भाव से प्रकृति के सभी पदार्थ परोपकार के लिये देते हैं। वैसे ही हम भी संसार में व्यवहार करें। यही स्वाहा का अर्थ सही अर्थों में हो सकता है।

२. कि स्विद् यज्ञस्य प्राणः ?

- इदं न मम यज्ञस्य प्राणः ।

यह संसार अनित्य है, एक क्षण भी स्थिर रहने वाला नहीं हैं, परन्तु आत्मा सदैव रहनेवाला है। जब मनुष्य को असत् अर्थात नाशवान पदार्थ से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है, तो वह वही स्थिति होती है। **मेरा कुछ नहीं है,** इस बात को स्वीकार करने से मनुष्य निष्काम हो जाता है, निरहंकार हो जाता है। **मै खाली हाथ संसार में आया था और खाली हाथ ही संसार से जाऊँगा। फिर क्यों मेरा मेरा करें ?** संग्रह उतना ही करें, जितनी जरूरत है। बाकी परोपकारी कार्यों में धन सम्पति लगाना ही यज्ञ का प्राण है।

३. किं स्विद् यज्ञस्य सारः?

- सुरभि यज्ञस्य सारः।

जब मनुष्य उपर्युक्त भावना से यज्ञ एवं संसार में व्यवहार करता है, तब उसकी लोकप्रियता बढने लगती है। वह मनुष्यों में श्रेष्ठ गिना जाता है, सभी उसका आदर करते है। उसकी कीर्ति सर्वत्र फैल जाती है। समाज में उस पर विश्वास करते हैं। उसकी वाणी का आदर करते हैं। समाज उसको आदर्श मान कर चलता है। वह जिस क्षेत्र में कार्य करता है। उसमें आशातीत सफलता निर्भर है। क्या यह छोटी बात है, इससे बढकर संसार में और क्या चाहिए।

त्रिविध यज्ञ

* **सात्विक यज्ञ** - फल की इच्छाओं को छोडकर जो यज्ञ किया जाता है, वह **सात्विक यज्ञ** कहलाता है।

* **राजसिक यज्ञ** - फल की इच्छा, वैभव प्रदर्शन, ऐश्वर्य प्रदर्शन के लिये जो यज्ञ किया जाता है, वह **राजसिक यज्ञ** कहलाता है।

* **तामसिक यज्ञ** - विधिविहीन, वैदिक विहीन, दान रहित, जो यज्ञ किया जाता है, वह **तामसिक यज्ञ** कहलाता है।

- गढनिवास, मोहकपुर, देहरादून
(उत्तराखंड) ०९४११५१२०१९

thearyasamaj.org

रक्तसाक्षी वेदप्रकाशजी

कवि– प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
(अबोहर–पंजाब)

आगे बढकर शासन को जिसने ललकारा ।
नारी रक्षक–गुण्डों को डटकर फटकारा ।।
मरकर जिसने जाति को जीना सिखलाया ।
उसने शीश कटाया, सबने शीश उठाया ।।

निकली उसके पीछे इक वीरों की टोली ।[१]
गोली खाकर भी बोले सब तेरी बोली ।।
लेकर के अरमान चला तू सबके आगे ।
सुनकर तेरा नाद सभी जन सोय जागे ।।

किसने तुझको घुट्टी ऐसी घोट पिलाई ?
तेरे कारण तरूणाई ने ली अंगडाई ।।
दिशा दिखानेवाले तेरी जय हो जय हो ।
पाप ताप सब मिटे धरा पर तनिक न भय हो।।

ऐ गुदडी के लाल तुम्हें हम शीश नवाते ।
लेखराम की तान, तुम्हारी जय जय गाते ।।
फौज ऋषि की आई, वह काँपा अन्यायी ।२
झूम उठे नर–नारी, मुक्ति सबने पाई ।।

धधकी कैसी दक्षिण में वह भीषण ज्वाला ।
महादेव, शिव, धर्म, हमारा भीम निराला ।।[३]
बदल दिया इतिहास वेद के हे मतवाले ।
धन्य ऋषि सन्तान, पिये जिस विष के प्याले ।।[४]

मस्त हुआ हर ग्राम सुनी जब वैदिक बन्सी[५] ।
कर दी नौका पार भँवर में जो थी फँसी ।।
सींची देकर रक्त, फले–फूले फुलवारी ।
लहर लहर लहराये ओ३म् पताका प्यारी ।।

१– दक्षिण के वेदप्रकाशजी के बलिदान से ही आर्य समाज में बलिदान की परम्परा चल पडी ।
२– आई फौज दयानन्दवाली यह गीत गाते भारतभर से आर्य सत्याग्रही हैदराबाद आये थे ।
३– महादेव, शिवचन्द्र, धर्मप्रकाश और भीमराव (हुपला) आदि हुतात्मा ।
४– भाई श्यामलाल की ओर संकेत है । ५– भाई बन्सीलाल की ओर संकेत है ।

thearyasamaj.org

(जुलाई २०१४ - में प्रकाशित लेख का शेष भाग)

भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें

-डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

* सरकार और सहकार संस्थाओं में भी घोटाले हैं । सरकार से अधिकाधिक पैसे लूटना, फँसाकर पैसा लेना ये भी भ्रष्टाचार ही है । इसके पीछे भी खराब नीयत कारण है । लोककल्याण हेतु योजनायें बनायी जाती हैं, परंतु लोगों के हक का पैसा बिचौलिए ही खा जाते हैं ।

* वकील की वकालत भी पैसों की आदी हो गई है । प्रतिवादी से ज्यादा पैसा ऐंठकर वादी के लिए बहस करना छोड देते हैं । दोनों ही ओर से पैसा लूटकर समस्या को और बढने के लिए छोड देते है । इसमें उनकी खराब नीयत, बेईमानी, अप्रामाणिकता झलकती है ।

* न्यायाधीश को देखिए, वह भी पैसा लेकर जैसा न्याय देना चाहिए वैसा नही देता है इसी कारण दोषी, निर्दोष होकर खुलेआम घूमता है, तो निर्दोष सजा पाता है ।

* राजनेताओं का तो क्या देखना, सब जगह यहाँ तक की घर-घर में, पहले तो झगडे लगा देते है और बाद में मध्यस्थता का नाटक करके दोनों ओर से पैसा तथा मानमरातब प्राप्त करते हैं । ये लोग दोषियों को सहारा देकर उनसे पैसा ऐंठते हैं । अपने प्रभाव का उपयोग कर कायदे कानून को ताक पे रखकर अधिकारियों को गलत काम करने के लिए बाध्य करते हैं । (उसके लिए उनको भले की साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग करना पडे ।) और इस प्रकार दोषियों का काम (गलत काम) कर देते हैं। चुनाव तो मानों सौ बुराईयों की जड हो गया है । मतों को जोडने के लिए देश तक को दाँव पर लगाया जाता है । गलत रास्तों से धन इकठ्ठा किया जाता है । बगलबच्चों को संभाला जाता है, ठाठबाँठ किया जाता हैं । धनसंग्रह करने के लिए कारखानों का प्रारंभ करना, सरकारी खजाने को जादा लूटना, बँको के नामपर लोगों को लूटना आदि कार्य राजनेताओं के मानों नित्य कर्म हो गए हैं ।

* आज की शिक्षण संस्थाएँ राजनेताओं के हाथ का खिलौना बनकर रह गई है । शिक्षा जैसे पवित्र कार्य में डोनेशन का राक्षस पग फैला रहा है । प्रवेश के लिए डोनेशन, नौकरी के लिए डोनेशन, पढाई के नाम पर मोटी रक्कम फीस के बहाने कमाई जा रही है ।

* खाजगीकरण का नाम देकर आज जनता और सरकार का खजिना लूटा जा रहा है ।

* गुत्तेदार लोग रोड बनाने का गुत्ता मिलने के लिए पहले तो नेताओं को पैसा देते हैं,

thearyasamaj.org

अधिकारी लोग अपना हिस्सा निकाल देते हैं और गुत्तेदार अपना फायदा निकालकर बचेकुचे पैसों से गड्ढोंवाला रोड बनाकर जनता को परेशाली में डालते हैं ।

* राजकीय पक्ष जो कि देश की जनता का भला करने का दंभ भरते हैं । उनमें से कोई भी पक्ष आज भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रहा । सभी पक्ष और संघटनाएं आज भ्रष्टाचार में लिप्त हैं । यही पार्टियाँ चुनाव के पहले **भ्रष्टाचार मिटाओ** का नारा लगाती हैं । और सत्ता में आने व सरकार बनने पर अलग ही राग आलापती रहती हैं ।

सबसे बडी विडंबना तो यह है कि जो सारी दुनिया को सत्य का धर्म का पवित्र मार्ग बताते हैं, लोगों को तप,दान, नीति आदि सिखाते हैं, वे बाबालोग (धर्मगुरू), संन्यासी लोग और उनकी संस्थाएँ धन जुटाने में लगे हुए हैं । वे सभी भोगवादी बनकर विमानों में, महंगी गाडियों में, हेलिकैप्टरों में घूमते हुए देखे जा रहे हैं । सर्वाधिक संपदा जमा करते हुए पैसों के लिए हत्याएं हो रही हैं । इसके बाद भी साधुओं के मरने पर उनकी संपत्ति के लिए झगडे हो रहे है । ये बाबा लोग तथाकथित साधु संत भी उपर उपर से अध्यात्म तथा मोक्ष का उपदेश करते है परंतु माया, मोह, लालच, भोगवाद आदि सभी बुराइयाँ उनके अंदर विद्यमान हैं ।

* अपनी आय का कर न चुकाना भी भ्रष्टाचार ही है । उसमें नेता लोग, सिनेमां जगत्, उद्योगपति, बडे-बडे अधिकारी शामिल हैं ।

* उद्योगपति पक्ष-पार्टियों को खरीदकर अपनी वस्तुओं की मनमानी कीमत वसूलकर फायदा कमाते हैं ।

* राजनेता लोग अपनी काली कमाई स्वदेश में रखने में धोखा होगा, ऐसा समझकर विदेशों में रखते है ।

ऐसे एक नही हजारो किस्से हैं । आज पैसों का भ्रष्टाचार बहुत ही गहराइयों तक पहुंचा हुआ है । जन-जन तक इसमें इजाफा होता हुआ देखा जा सकता है ।

राजकीय नेताओं में भी पहली पीढी के नेता निःस्वार्थी, त्यागी परोपकारी थे, वह क्यों ? क्या वे कानून के भय से ऐसे थे ? क्या वे सरकार के दबाव के चलते अच्छे बन गये थे ? महात्मा गांधी बॅरिस्टर होते हुए भी **फॉरेन रिटर्न** होते हुए भी पंचा धोती पहने रहे, लालबहादूर शास्त्री प्रधानमंत्री होते हुए भी उनकी मृत्यु के उपरांत उनका बैंक बैंलन्स कुछ भी नही था, सुभाषचंद्र बोसने क्लास वन रहकर लाखों कमाने की बजाय देशहित में सर्वस्व त्याग कर दिया, गुजलारीलाल नंदा राष्ट्र के गृहमंत्री होते हुए भी अन्ततक किराये के मकान में रहे । ये सभी किसके दबाव में ?

जीवन की अच्छाई, अच्छी नियत, त्याग, तप, निःस्वार्थ, भाव, परोपकार, सादगी, नम्रता, आध्यात्मिकता,

thearyasamaj.org

वैराग्य आदि बातें कायदे कानूनों के भय से उत्पन्न नहीं होते। भ्रष्टाचार का रोग विदेशों में जमा कालाधन वापस लाने से, कडे कानून बनाने से, अथवा फाँसी की सजा देने से दूर नहीं होगा। यह प्रवृत्ति का रोग है और उसका निराकरण प्रवृत्ति को बदलकर ही संभव है। प्रेय प्रवृत्ति को श्रेय प्रवृत्ति में बदलकर ही भ्रष्टाचार का निराकरण संभव है। कठिन जरूर है पर असंभव नहीं। अष्टांगयोग के (पूरे रूपमे) अनुष्ठान से यह संभव हो सकेगा।

सत्प्रवृत्ति का राजमार्ग महर्षि दयानंद ने वेदों का आधार लेकर प्रशस्त किया है। उनके अनुसार मानवजीवन का निर्माण सत्यज्ञान, धर्माचरण, न्यायाचरण, नैतिकता, पक्षपात को छोडना सृष्टिक्रम के अनुसार चलना इत्यादि सिखाने से हो सकेगा। किसी अकेले के जीवन से यह महत्कार्य संभव न हो पायेगा। देश की शिक्षा पद्धति का उसका पाठ्यक्रम बदलना पडेगा, गुणवत्ता को आधार बनाकर गुणवाचक चलना होगा।

भ्रष्टाचार की जडे बहुत गहरी हैं। वें केवल त्याग, तप, विद्या से ही निकल सकेगी। रामदेवबाबा यदि योगगुरू और योगऋषि हैं, तो योग आयुर्वेद की शिक्षा पूरे संसार को देते हुए इस ज्ञानगंगा को पवित्र करना होगा। धर्माचरण उपासना आदि को छोडकर क्षुद्र पैसों के, भ्रष्टाचार के पीछे अपना अमूल्य जीवन नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। योगी को यह पता होना चाहिए की आत्मा के सामने पैसों का कुछ भी महत्व नहीं है। मरने के पश्चात् साथ देनेवाली बातें बताने की आज जरूरत है। वेद ने कहा है **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'** वेदमार्ग के अलावा सुखशांति व आनंद का मोक्ष का दूसरा कोई मार्ग ही नहीं है। वेदज्ञान (सत्यज्ञान) का रास्ता छोडने से ही हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार का प्रारंभ हो गया है। रामदेवबाबा यदि दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं, तो उनके कहे रास्ते पर चलकर पहले सारे देश के संन्यासियों को एक करें, उन्हें पहले वेदमार्गी बनायें। विद्वानों को धर्मगुरूओं को और पूरी मानवजाति को वेदमार्ग पर लावें। पौराणिक लोग जो कि स्वयं को वेदमार्गी समझते हैं और वेद के अनुयायी भी बताते हैं, यह भी एक तरह से भ्रष्टाचार ही है, उसको दूर करने का प्रयत्न करे इन प्रस्थापित धार्मिक भ्रष्टाचारियों को खुली छूट देकर व उन्हें को साथ लेकर सरकार से भ्रष्टाचार रोकने की मांग करना केवल दिखावा होगा, वही आज हो रहा है।

परमात्मा इन त्यागी तपस्वी लोगों को सद्‌बुद्धि दे, अविवेक से बचाये और जनता को भी सत्य जानने की प्रेरणा दें।

(समाप्त)

-आर्य समाज परली-वै. जि.बीड

मो. ९४२१९५१९०४

thearyasamaj.org

दक्षिण के आर्य बलिदानी - वेदप्रकाश जी

– प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्य समाज के रक्तरंजित इतिहास में वीरवर वेदप्रकाश के बलिदान का एक ऐतिहासिक महत्व है ।

वीर वेदप्रकाश को जन्म के समय माता-पिता ने **दासप्पा** नाम दिया था । आपका जन्म फाल्गुन शुक्ल ५ शक संवत् १८२७ को धाराशिव (उस्मानाबाद) जिलातंर्गत उमरगा तहसील के ग्राम गुंजोटी में श्री शिवबसप्पा (दासमिया) हरके के घर में हुआ । आपकी माता का नाम रेवतीबाई था । आपने मराठी की पांचवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की । गुंजोटी में आर्यसमाज को आरम्भ से ही कुशल व सक्रिय कार्यकर्त्ता मिलते रहे हैं । वास्तव में वीर वेदप्रकाश ही आर्यसमाज गुंजोटी के संस्थापक थे । आर्यसमाज के प्रचार से स्थानीय मुसलमान व अधिकारी बहुत चिढते थे । वेदप्रकाश आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होकर आर्यसमाज के सत्संगों में नियमपूर्वक भाग लेने लगे ।

अब आपने अपना नाम बदलकर **वेदप्रकाश** रख लिया । इनके उत्साह से आर्यसमाज का संगठन और भी सुदृढ हो गया । आपके बलिदान के समय आर्य बनने के पश्चात् ही गुंजोटी में आर्यसमाज की शाखा स्थापित हुई, ऐसा नहीं है । आर्यसमाज तो वहाँ कुछ समय पहले स्थापित हो चुका था । वेद प्रकाश लाठी, तलवार चलाने में बहुत निपुण थे ।

छोटू खां नाम के एक पठान को आपने कहा, 'परस्त्री को बुरी दृष्टि से मत देखा करें ।' इस कारण छोटू खां व अन्य मुसलमान वेद प्रकाशजी व अन्य आर्यों के शत्रु बन गये । हिन्दुओं को सौदा देना बन्द कर दिया । महाराष्ट्र में पान का बहुत प्रचलन है । वेदप्रकाशजी ने पान की दुकान खोलकर हिन्दुओं की माँग को पूरा किया । चाँद नाम का पानविक्रेता इससे जलभुन गया । वेदप्रकाशजी पर कई बार जानलेवा आक्रमण हुए परन्तु अपनी वीरता से वह हर बार बच गये ।

चार मार्गशीर्ष सन् १९९४ को पुलिस अधिकारियों ने प्रतिष्ठित हिन्दुओं को बुलवाकर थानें में बिठा और पीछे से मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर आक्रमण करवा दिया । आर्यसमाज के मन्त्री के घर पर भी आक्रमण किया गया । सूचना पाकर वेदप्रकाशजी उनके घर की और दौड पडे । सैकडों सशस्त्र मुसलमानों ने निहत्थे आर्यवीर को घेर लिया और आठ-नौ दुष्टों ने उसे मार गिराया । वीर वेदप्रकाश की निर्ममता से हत्या कर दी गई । आक्रमणकारियों ने मुसलमान बन जाने पर उसे छोड देने का

thearyasamaj.org

आश्वासन दिया, परन्तु आपने बडी दृढता व शूरता से वैदिक धर्म पर प्राण निछावर करके अपने नाम को सार्थक कर दिया ।

वेदप्रकाशजी के हत्यारे पहचान लिये गये । साक्षी भी मिल गये, परन्तु न्याय का नाटक करते हुए हैदराबाद के इस्लामी न्यायालय ने हत्यारों को निर्दोष घोषित करके छोड दिया । आर्यों ने वेदप्रकाश का बलिदान दिवस मनाया । वेदप्रकाशजी ने बलिदान यज्ञ में आहुति देकर इसे प्रचण्ड किया । आपके पीछे बलिदान देनेवालों का ताँता ही लग गया । पं. श्री नरेन्द्रजी ने भाव भरित हृदय से लिखा है -**'सहर्ष आत्मोत्सर्ग करनेवाले वीर हकीकतराय के बाद भारत के इतिहास में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह 'वेदप्रकाश' ही थे ।'**

श्री भाई बंशीलालजी व देशबन्धुजी- औराद तत्काल गुंजोटी पहुँच गये । परिस्थितियाँ बहुत बिकट थीं । वीर का दाहकर्म करने में भी बाधायें डाली गईं । हिन्दुओं ने बहुत जोश व श्रद्धा से धर्मवीर वेदप्रकाश की अन्त्येष्टि की व्यवस्था की । यह भी स्मरण रहे कि निजामी सरकार ने बहुत ही निर्लज्जता से यह प्रचार किया कि वेद प्रकाश तो आर्य समाजी था ही नहीं । तब आर्यसमाज ने सरकार के इस मिथ्या प्रचार का सप्रमाण प्रतिवाद किया ।

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध पत्रकार व विद्वान पं. श्री त्रिलोकीचन्दजी शास्त्री ने तब सोलापुर (गुंजोटी के समीप ही है) से वैदिक सन्देश साप्ताहिक में हुतात्मा के बलिदान का विस्तृत समाचार देते हुए निम्न कविता भी प्रकाशित की थी -

गिरिसा अटल है-

विचलित होता जो न विघ्न बाधा देखकर,
रहता विपत्ति में जो गिरि सा अटल है ।
कर्मक्षेत्र में जो बढता है, धीर धार उर,
ध्येय है, अटल दृढवीर जो प्रबल है ॥
सर्व सुख छोडकर, सङ्कट लगावे गले,
कष्टों का समूह जिसे करे न विचल है ।
पुत्रवती माता उसकी ही जग में है धन्य,
जीवन उसी का होता, जग में सफल है ॥

- वेदसदन, नई सूरज नगरी, अबोहर (पंजाब)

भारी संख्या में चलो गुंजोटी !

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि आगामी दि. २४, २५ व २६ नवम्बर २०१४ को हैदराबाद संग्रामकालीन ऐतिहासिक आर्य समाज गुंजोटी ता. उमरगा जि. धाराशिव (उस्मानाबाद) में आयोजित अमर हुतात्मा पं. वेदप्रकाशजी बलिदान समारोह, आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समारोह एवं अन्य विविध कार्यक्रमों में आप सभी परिवार व मित्रोंसहित भारी संख्या पधारे और कार्यक्रमों को उत्साह के साथ सफल करें ।

विनीत- महा.आ.प्र.सभा एवं
आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति

thearyasamaj.org

डॉ. सत्यपालसिंहजी द्वारा संसद में प्रस्तुत भाषण

गत दि.२२ जुलाई २०१४ को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान सायंकाल ठीक ६.३० बजे नव निर्वाचित आर्यसांसद डॉ.सत्यपाल सिंहजी (पूर्व पुलिस कमिश्नर, मुम्बई) ने महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के समाज एवं राष्ट्रोत्थान हेतु किए गए कार्यों की ओर अधिक सम्मान देने की मांग करते हुए प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसका हजारों लोगों ने लोकसभा टीवी पर सीधा प्रसारण देखा। आप सभी आर्यजनों के अवलोनकनार्थ उनका वक्तव्य यहां ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया जा रहा है। - संपादक

माननीय (लोकसभा) अध्यक्ष महोदय! स्वतंत्रता संग्राम, और समाज व राष्ट्र के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दिये गये अप्रतिम योगदान को सरकार द्वारा स्वीकार करने और उनके अद्वितीय प्रयासों की सराहना की आवश्यकता है। देश मे १८७४ में विदेशी राज्य से मुक्ति का शंखनाद करनेवाले स्वामी दयानन्द पहले महापुरूष थे। कांग्रेस से भी १० वर्ष पूर्व १८७५ में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी, जिसका मुख्य अभियान समाज व राष्ट्र को अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड व गुरूडम से मुक्ति, लडके-लडकियों के लिए समान संस्कार युक्त अनिवार्य शिक्षा, (हम तो २०१० में Compulsory Education Bill लाये) जन्मगत जाति व्यवस्था पर प्रहार कर दलितों व शोषितों को गले लगाकर छुआछूत खत्म करना, नारी शिक्षा व विधवा विवाह का समर्थन था।

महर्षि दयानन्द पहले महापुरूष थे, जिन्होंने इस मिथक का भण्डाफोड किया कि बिना अंग्रेजी जाने कोई व्यक्ति बुद्धिमान, तार्किक, वैज्ञानिक सोच रख सकता है तथा समाज उत्थान व राष्ट्र-उद्धार की बातें कर सकता है।

भारतीय संस्कृति, इतिहास व वैदिक साहित्य के उलटे अर्थ कर उन पर कुठाराघात करने वालों को उन्होंने प्रभावी चुनौती देकर एक गर्व करनेवाली दिशा दी। स्वामी दयानन्द ने डंके की चोट से कहा कि देश के पतन का मुख्य कारण वेदों (वैदिक शिक्षा) को भूला देना है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वे मानव जाति की अमूल्य धरोहर है तथा उन्हें पढने का अधिकार सब जाति-धर्मों- देशों के लोगों को हैं। आर्य इस देश के मूल निवासी हैं। आर्य आक्रमण तथा आर्य द्रविड भेद जैसे मुद्दे कृत्रिम, झूठे व देश को बाँटने वाले हैं। भारतीय सभ्यता व संस्कृति करोडों वर्ष पुरानी है तथा यह देश कला, कौशल, विज्ञान में दुनिया का सिरमौर रहा

स्वामी दयानन्द ऐसे महापुरूष हुए जिन्होंने कभी-भी, कहीं भी असत्य से समझौता नहीं किया। उन्होंने प्रतिपादन

thearyasamaj.org

किया कि सभी मतों व सम्प्रदायों में प्रचलित धर्मों के बीच में मूल तत्व एक ही है, जो सभी मतों-सम्प्रदायों में अविरूद्ध (Common) है, वही सत्य धर्म के मूल तत्व है।

स्वामी दयानन्द पहले राष्ट्रचिंतक थे, जिन्होंने देश की एकता समृद्धि व गौरव के लिए एक भाषा (हिन्दी), एक धार्मिक ग्रन्थ (वेद), एक इष्ट देव (ईश्वर), एक जाति (मानव) तथा एक उपासना पद्धति का पुरजोर प्रतिपादन किया। उसको महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, अरविन्द घोष आदि महापुरूषों ने अपना गुरू माना।

यह दुर्भाग्य की बात है कि उनके अप्रतिम योगदान को इस देश के इतिहासकारों व तात्कालिक भारत सरकार ने समुचित मान सम्मान नहीं दिया। अध्यक्ष महोदय ! आपके माध्यम से मैं सरकार से मांग करता हूँ कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे अलौकिक व अद्वितीय व्यक्तित्व को सम्यक् मान व सम्मान दिया जाये और उनके असाधारण योगदान को-विभिन्न प्रकार से सराहना की जाये ! नहीं, तो आने वाली पीढियाँ हमें माफ नहीं करेंगी। धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय !

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली-वै.

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं। विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। हाल ही में आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मीआंवला तेल, आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी है।

राज्य की सभी आर्य समाजें इन औषधियों को मंगाकर अपनी संस्था में औषाधलय खोलें। इसके लिये हमारी फार्मेसीद्वारा आर्य समाजों को विशेष छूट दी जायेगी। अतः सभी आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क कर इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें।

संपर्क - विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

निवेदक - मन्त्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ

thearyasamaj.org

गुरूकुल कोसरंगी में प्रान्तीय सम्मेलन

आर्षज्योति गुरूकुल आश्रम कोसरंगी (जि.महासमुन्द- छ. गढ) में आगामी ५,६ व ७ दिसम्बर २०१४ को प्रान्तीय स्तर पर विशाल रूप में **वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन** का आयोजन किया गया है । इस भव्य सम्मेलन में देश के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वान, संन्यासी, आचार्य, समाजसेवी महानुभाव व शीर्षस्थ नेतागण पधार रहे हैं । विभिन्न सम्मेलनों के साथ ही संगोष्ठी, चिन्तन परिषद आदि प्रेरक कार्यक्रम भी इस सम्मेलन में होंगे ।

अतः इस सम्मेलन में आर्यजन भारी संख्या में पहुंचे । अधिक जानकारी हेतु गुरूकुल के आचार्यजी मो. ०९६१७०८२००० से सम्पर्क करें ।

होशंगाबाद गुरूकुल का वार्षिकोत्सव

देश के शतायु प्राप्त प्रसिद्ध गुरूकुल संस्थान **आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद** (म.प्र.)का १०३ वां **वार्षिक महोत्सव** आगामी दि. ५,६ व ७ दिसम्बर को सम्पन्न हो रहा है । इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वान् मनीषियों के सारगर्भीत मधुर उपदेश सुनने मिलेंगें । साथ ही गुरूकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों के शारीरिक बल-प्रदर्शन व बौद्धिकज्ञान की प्रस्तुति भी होगी

अतः इस वार्षिकोत्सव में आर्यों को पधारने का आवाहन गुरूकुल के आचार्य श्री योगेन्द्रजी याज्ञिक ने किया है ।

स्वामी सदानन्दजी की महाराष्ट्र यात्रा

दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) के **प्रधानाचार्य स्वामी सदानन्दजी** जुलाई माह के पहले सप्ताह में महाराष्ट्र पधारे थे । अपनी छह दिनों की यात्रा में वे मठ के पुराने व नये स्नातकों से मिले, जो राज्य के विभिन्न स्थानोंपर संस्कृत अध्यापन, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार आदि कार्यों में संलग्न हैं । राज्य के दो गुरूकुलीय शिक्षालय वेदश्री गुरूकुल रामलिंग एडसी (ता.जि.उस्मानाबाद) व श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम, परली-वैजनाथ (जि.बीड) में पधारकर स्वामीजीने ब्रह्मचारियों व अध्यापको को अपने आशीर्वचनों से लाभान्वित किया तथा आर्थिक सहयोग भी दिया । परली में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी, वेदप्रचारप्रमुख लक्ष्मणराव आर्य आदियों से मिलकर राज्य में गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रसार व वेदप्रचार कार्य के विषय में विस्तार से विचार विनिमय किया । लातूर में मठ के स्नातकों का पारिवारिक सत्संग सम्पन्न हुआ, जिसमें यज्ञ व भजन के पश्चात् स्वामीजी ने मार्गदर्शन किया । साथ ही श्री स्वामीजी माजलगांव, उदगीर आदि स्थानों पर भी गये ।

thearyasamaj.org

जानापुर में श्रावणी समारोह सोत्साह सम्पन्न

कर्नाटक के बसवकल्याण शहर के समीपस्थ जानापुर ग्राम की सक्रिय आर्य समाज में इस वर्ष **श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव** हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया । दि. २७ जुलाई से २८ अगस्त तक पूरे माह भर में लगभग ५७ परिवारों में प्रतिदिन रात्रि में ८.०० बजे पारिवारिक सत्संग चलते रहें । इस विशाल सत्संग अभियान में पौरोहित्य कर्म पं. श्री शंकरराव गुरूजी (तलभोग) ने किया । यज्ञ, भजन व प्रवचन के माध्यम से वेदों का पावन ज्ञानसंदेश आर्यों ने घर-घर तक पहुंचाया । 'परमात्मा अमृतस्वरूप वेदवाणी समग्र विश्व के प्राणिवर्ग के लिए कितनी उपयुक्त है, जिससे सारा संसार शाश्वत सुख व शान्ति को प्राप्त कर सकता हैं,' ऋषि दयानन्द के इस मन्तव्य को वेदप्रचार अभियान के माध्यम से जनमानस मे फैलाया गया । १७ जुलाई को बिजनौर (उ.प्र.) से आमन्त्रित वैदिक विद्वान पं. मोहितजी शास्त्री के व्याख्यान व भजनोपदेशक पं. रामपालजी आर्य के मधुर भजनों से श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हुए । वेदप्रचार अभियान का समापन श्री राजेन्द्र हुलसुरे के यहां आयोजित पूर्णाहुति कार्यक्रम से हुआ । बसवकल्याण के आर्यजन सर्वश्री नारायणराव बुन्ना (प्रधान), भानुप्रसाद पांडे (मंत्री), माणिकराव लाड (पुरोहित) कर्नाटक के वेदप्रचारमंत्री श्री सुभाष सुत्रावे, शिवाजी जगताप आदियों ने भी सम्बोधित किया ।

इस वेदप्रचार अभियान की सफलता के लिए प्रधान विलासराव कराळे, मन्त्री विजयकुमार जगताप, कोषाध्यक्ष तातेराव जगनाथ व अन्यों ने प्रयत्न किये । समारोह में स्थानिकों के साथ बसवकल्याण, तलभोग, वरवट्टी, निरगुडी आदि स्थानों से आर्यजन पधारे थे ।

शोक समाचार

श्रीमती पुष्पाबाई लड्डा का निधन

परतूर के प्रतिष्ठित व्यापारी एवं वैदिक धर्मप्रेमी श्री प्रदीपकुमारजी लड्डा की माताजी श्रीमती पुष्पाबाई श्रीवल्लभजी लड्डा का दि. १ अक्टूबर को रात्रिमें ९.४० बजे वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया । उनके पश्चात २ पुत्र, कन्याएं, बहुएं, पौत्र-पौत्रियां विद्यमान हैं ।

श्रीमती पुष्पाबाई के पार्थिव पर दूसरे दिन दोपहर २ बजे पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये । परली के पूर्वनगराध्यक्ष श्री जुगलकिशोर लोहिया एवं उदय ट्रान्सपोर्ट के श्री भंडारीजी के प्रयत्नों से सर्वश्री तानाजी शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.नरेश शास्त्री, श्यामसुंदर आर्य, अमृतमुनिजी आदियों ने यह दाहसंस्कार किया । दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि !

thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

परमेश्वराला जाणूनच मोक्षप्राप्ती

श्रोतस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद् वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ।
चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

जो कानांना श्रवणशक्ती देणारा आहे, जो सुख दुखादी ज्ञानाचे साधनभूत अंतःकरणा (मनाला) मननशक्ती देणारा आहे, जो वाणीला खरोखरच वाक्शक्ती प्रदान करणारा आहे. जो प्राणांना प्राणशक्ती देणार आहे, जो डोळयांमध्ये दर्शनशक्ती भरणारा आहे, अशा त्या परब्रह्म परमेश्वराला जाणून, समजून, आचरणात आणून ध्यानी व ज्ञानी लोक मोक्ष प्राप्त करतात. तो ईश्वर निश्चितच सर्वभौतिक पदार्थांहून वेगळ व इंद्रियसुखांपासून भिन्न आहे. अध्यात्मज्ञानी भक्त जग या मायालोकां (मृत्युलोकां) पासून वेगळे राहत मरणधर्मरहित म्हणजेच मुक्त होतात.

(केनोपनिषद १/२)

दयानंदांची अमृतवाणी

पुराण ग्रंथ - कपोलकल्पित व खोटे

पुराणातील बहुतेक गोष्टी खोट्या आहेत. परंतु घुणाक्षर न्यायाने एखादी गोष्ट खरीही आहे. जी एखादी गोष्ट खरी आहे, ती वेदादी सत्यशास्त्रांतून घेतलेली आहे. आणि ज्या गोष्टी खोट्या आहेत, त्या भटाभिक्षुकांनी रचलेल्या आहेत. उदाहरणार्थ– शिवपुराणामध्ये शैवांनी शिवाला परमेश्वर मानून विष्णू, ब्रह्मा, इंद्र, गणेश, सूर्य इत्यादिकांना शिवाचे दास ठरविले आहे. वैष्णवांनी आपल्या विष्णुपुराणात विष्णूला परमात्मा मानून शिव, विष्णू वगैरेंना तिचे नोकर बनविण्यात आले. गणेश पुराणात गणपतीला ईश्वर व इतर सर्वांना त्याचे दास बनविले गेले. या साऱ्या गोष्टी या सांप्रदायिकांनी नव्हे मग कोणी केल्या? ही सारी पुराणे एकाच माणसाने रचली असती, तर त्यात अशा परस्परविरोधी गोष्टी आल्या नसत्या. ती विद्वानांनी लिहिली असती तर अशा विचित्र गोष्टी त्यात मुळीच आल्या नसत्या. त्यापैकी एका पुराणातील गोष्ट खरी मानावी तर दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते, दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी तर तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते. आणि तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी तर इतर सगळ्या पुराणांतल्या गोष्टी खोट्या ठरतात.

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः - चारित्र्यवंतांमुळेच पृथ्वीला शोभा -

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचनाढ्यैः स्वदारपरितुष्टैः ।
परपरिवादनिवृत्तैः क्वचित् क्वचिन्मंडिता वसुधा ॥

अर्थः- ज्यास कठोर भाषण कधीही ठाऊक नाही, म्हणजेच प्रियवचन हेच ज्याचे धन असते, जे सर्वदा स्वस्त्रीच्या ठायी संतुष्ट (समाधानी) असतात. आणि जे दुसऱ्यांच्या निंदेविषयी पराङ्मुख असतात, असे चारित्र्यसंपन्न संत महात्मे समाजात क्वचितच आढळतात. अशा सत्पुरूषांमुळेच ही पृथ्वी सर्वदृष्टीने अलंकृत झाली (सजली) आहे. या भूमंडळाला शोभा असते, ती अशा शीलवान थोर पुरूषांमुळेच

(वर्तमान युगात तर असे सच्चरित्रयुक्त लोक सापडतच नाहीत. म्हणूनच आज या पृथ्वीमातेचे रूप भकास व दीनवाणे पाहावयास मिळत आहे. 'साधवो न हि सर्वत्र ।' या सूक्तीचा प्रत्यय येतो.)

(भर्तृहरिविरचित नीतिशतक - १०५)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा - विशेष सूचना -

१) आगामी २०१५ या नव्या वर्षाची **आर्य दिनदर्शिका** कांही दिवसांतच प्रकाशित होत आहे. यासाठी आर्य कार्यकर्ते **प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी -उदगीर (मो.०९४२२६१०३१३) व विजयकुमार कानडे-निलंगा (०९४२३३४९४०९)** प्रयत्नशील आहेत. तरी आर्यजनांनी दिनदर्शिका प्राप्तीसाठी प्रतीक्षा करावी. प्रचारासाठी अल्पदरात विक्रीकरिता ठेवलेल्या या दिनदर्शिका मोठ्या प्रमाणात खरेदी करून भेट स्वरूपात वितरीत कराव्यात.

२) येत्या डिसेंबर २०१४ महिण्यात सभेतर्फे शाळा महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांच्या वैचारिक प्रगतीसाठी आयोजित वैदिक व्याख्यानमालेस (जीप वांहनांद्वारे प्रचार-प्रसार)आर्य कार्यकर्त्यांनी प्रयत्नपूर्वक यशस्वी करावे.

३) सभेतर्फे किल्लेधारूर येथे विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा तर सोलापुर येथे महाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित करण्यात आली आहे. यासाठी आपल्या परिसरातील विद्यार्थ्यांना पाठवावे.

४) विद्यालयीन व महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धांसाठी विद्यार्थ्यांचे निबंध पाठवावेत.

thearyasamaj.org

दक्षिणेतील क्रांतिकारी 'आर्य समाज - गुंजोटी'

-दिनकरराव देशपांडे

भोगावती नदीच्या प्रवाहाने दोन भागात विभक्त झालेले उमरगा तालुक्यातील एक गांव कागदोपत्री **गुंजोटी** या नावाने प्रसिद्ध आहे. या गावच्या पराक्रमी कार्य वैशिष्टयांमुळे अभिमानाने म्हणावे वाटते -

गुणज्योती ज्ञानज्योती,
बलिदानाने पावन झालेली,
गूंज उठी गुंजोटी.!

हैद्राबाद निजामाच्या अखत्यारीतील पायग्याचा गुंजोटी हा तत्कालीन जिल्हा, जो खुर्शिदअली जहागीरदारास इनाम जहागीर म्हणून दिलेला होता. या जिल्ह्याच्या अंतर्गत लोहारा, भालकी, राजेश्वर, शहाबाद, नरसापूर व गुंजोटी हे सहा तालुके होते.

उत्पन्नाचा ठराविक भाग निजामाला व उर्वरित भागात जहागीरदाराकडे त्यातून महसूल वसूली-हिशेब, प्रजेची व्यवस्था, त्यासाठी तालुकेदार, तहसिलदार पाटील, पटवारी, देशमुख, देशपांडे यांच्या शवाय अन्य जहागीरदार मंडळी हेच त्या विभागाचा कारभार पाहायचे. स्वतंत्र न्याय खाते, टपाल खाते यांची ती व्यवस्था होती. पोलीस ॲक्शन पर्यंत यासाठी इमारतीही होत्या पण भग्नावस्थेत ! आजही तालुकदाराचा बंगला व त्याचे अवशेष दिसतात. गावाच्या मध्यवर्ती भागात गढी ही एक मोठी इमारत उंचवठ्यावर विस्ताराने पसरली होती. इथेच जिल्ह्याची सर्व कार्यालये शिवाय कारागृहही होते.

इ.स. १९११ पर्यंत नवाब कुत्फुद्दवला बहादूर यांचे तहसील कार्यालय होते. १९४० ते ४१ च्या दरम्यान या ठिकाणची सर्वच कार्यालये उमरगा येथे स्थलांतरीत करण्यात आली. तत्कालीन जनतेने आपला रोष प्रगट करून विरोध केला. बायका-मुलांसह सर्वांनीच विरोध दर्शविला, पण सर्वांचाच नाइलाज झाला. त्या वेळचे अधिकारी, वकील वर्ग यांचा नवाबावर प्रभाव पडला व त्यामुळे शासनाचा निर्णय मान्य करावा लागला. एका अर्थाने गुंजोटीचे ऐश्वर्य खंडित झाले.

निजामी जुलमी राजवट ! त्यातच नवाब व जहागीरदारांची जहांगीर त्यामुळे मुस्लिम वस्ती बरीच मोठी ! राज्य त्यांच्या हाती असल्याने हिंदूंवर अन्याय, अत्याचार आणि सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमावर बंदी ! सभा घेणे व मिरवणुका काढणे अशक्यप्राय होते. लग्नाच्या वराती साठीही परवानगीची गरज. एकूणच गावात सौहार्द, शांतता, बंधुभाव हे शब्द लोप पावून द्वेष, अत्याचार याला ऊत आला होता. एकूण मुसलमानांच्या दहशतीखाली वर्चस्वाखाली हिंदू समाज दबलेला होता.

thearyasamaj.org

मात्र १९२० नंतर येथील शिक्षित व सुजाण वर्गात या अत्याचाराविरूद्ध चीड निर्माण होऊन प्रतिकार करण्याची भावना जागृत झाली व त्या दृष्टीने पावले पडत गेली. लोकात जन जागृती होण्याच्या दृष्टीने इ. १९२७ मध्ये श्रीकृष्ण वाचनालय व श्री कृष्ण पाठशाळेची स्थापना करण्यात आली.

याच काळात संपूर्ण हैद्राबाद राज्यात भाई बंसीलालजी व भाई श्यामलालजी यांनी वैदिक धर्म संस्कृती व तत्वज्ञन यांच्या प्रचारांद्वारे अन्यायाविरूद्ध, अत्याचाराविरूद्ध, निजामाविरोधात मशाल पेटविली. याची परिणती म्हणजे गावातील सुजाण नागरिकांमध्ये त्या उभयताबद्दल एक आकर्षण निर्माण झाले. जागा, भवन काहीही नसतांना भावना एवढ्या जागृत झाल्या की १९३३ साली शिनाईच्या मठात गेली आर्य समाजाची स्थापना केली गेली.

जुलमी राजवटीविरूद्ध लढा देण्यासाठी संघटित होऊन आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. परिसरात त्याचा झपाट्याने प्रसार व प्रचार होऊ लागला. आर्य समाजाच्या स्थापनेनंतर पहिले हवन श्री गोविंदराव पाटील यांच्या घरी मोठ्या उत्साहाने संपन्न झाले. लोकांची आर्य समाजाबद्दल नितांत श्रद्धा निर्माण झाली. साप्ताहिक सत्संग असो की पर्वविशेष सणवार किंवा एखादा प्रचारक आला की त्या मठात बसण्यास जागा पुरत नसे. 'अन्याय व अत्याचाराविरोधात जुलमी राजवट व गावातील गुंडापासून संरक्षण करण्याच्या दृष्टीने आर्य समाज ही एकमेव संस्था आहे,' असा जनतेत विश्वास निर्माण झाला. संरक्षणाच्या दृष्टीन आर्य स्वयंसेवक संघ आर्य वीरदल कार्य करीत असे ! गुंजोटी आर्य समाजाचे पहिले अधिवेशन श्री वामनराव नानाराव चौथाईवाले (देशपांडे) यांच्या जागेत संपन्न झाले. आर्य समाजाची घंटा वाजली की लोक ताबडतोब उपस्थित राहात. अनेक विद्वान्, साधू, संन्याशी, प्रचारक त्यीत महिला विदूषींकडुनही मार्गदर्शन, प्रबोधन व्हायचे. विशेषतः उत्तर भारतीय विद्वानांनी आपले जे योगदान दिले, त्यांत त्यांचा सिंहाचा वाटा होता.

प्रतिवर्षी वार्षिक उत्सव साजरा होत असे. पण मराठवाडा आर्य महासंमेलन पंडित नरेंद्रजींच्या मार्गदर्शनाखाली १९७१ मध्ये संपन्न झाले. ते **न भूतो न भविष्यति** ठरले. श्री शिवाजीराव पाटील निलंगेकर व शेषरावजी वाघमारे हे स्वागताध्यक्ष होते. या संमेलनात अनेक विद्वानांनी सहभाग घेतला. त्यात विशेष उल्लेखनीय महानुभाव आचार्य कृष्णजी, म.आनंद स्वामी, ओमप्रकाश खतौलीवाले, स्वामी अग्निवेश , स्वामी इंद्रवेश हे तर होतेच, शिवाय गुंजोटी आर्य समाजातील दिग्गज प्रचारकांनी आपला अमूल्य वेळ दिला. सवितादेवी, सौ. शीलादेवी, व विद्योत्तमा यती या विदषीनीही आपली सेवा दिली. प्रातिनिधिक स्वरूपात मोजकीच नावे घेतली

thearyasamaj.org

आहेत. या सर्वांचे एक आकर्षण होते, ते धर्मासाठी झालेल्या हैद्राबाद रियासतच्या पहिल्या **वेदप्रकाश** बलिदानाची पावन भूमी म्हणून.

आर्य समाजाच्या संस्थापकांच्या नेतृत्वाखाली हिंदूची संघटना मजबूत होत चालली होती. त्यामुळे मुस्लिमांच्या अत्याचारास आळा बसू लागला. लोक निर्भय बनले. अत्याचाराचा विरोध करण्यास समर्थ बनले. परंतू ही वादळापूर्वीची शांतता होती. तत्कालीन मुस्लिम अधिकाऱ्यांच्या मदतीने गुंजोटी आर्य समाजाची पाळेमुळे उखडून टाकण्यासाठी परिसरातील शेकडो मुस्लिम जमवून पूर्व नियोजित कट करून दंगा करविला. याच दंग्यात वेदप्रकाशजींची निघृण हत्या करण्यात आली. या दंग्यात श्री वासुदेवराव देशमुख व गंगाराम गवंडी (आयनले) हे जबर मार लागून जखमी झाले. या प्रकारणात वेदप्रकाशचे खरे मारेकरी व दंगा घडवून आणणाऱ्या नराधमांऐवजी निरपराधांनाच पकडण्यात आले. त्यांच्यावर कार्यवाहीचे नाटक करण्यात आले. ठरल्या नुसार सर्वांना निर्दोष सोडून देण्यात आले. या प्रकरणात जवळजवळ सर्व आर्य (हिंदू) कार्यकर्त्यांना गोवण्यात आले. त्यांच्यावर खटले चालविण्यात आले. श्री हरिपंत रंगराव राखेलकर, श्री बाबुराव माणिकराव देशपांडे, श्री टोपणप्पा महादप्पा बबले, श्री गंगाराम तुकाराम गवंडी (आयनले), श्री यशवंतराव जोगदांडे, श्री गोविंदराव कारभारी, श्री वासुदेवराव देशमुख, श्री नागोराव यशवंतराव कुलकर्णी, श्री धोंडिबा एकनाथ गवंडी, श्री चिकिरप्पा गुरूपादप्पा हर्के, श्री गुरूलिंगप्पा कलप्पा बबले, श्री संग्राम हावगीरराव पाटील यांचा त्यात समावेश होता.

या खटल्यात उपरोक्त सर्वच सदस्यांकडून श्री व्यंकटराव नळदुर्गकर वकील, श्री किशनराव जयतीर्थाचार्य वकील मुरूम व दत्तात्रयप्रसाद वकील यांनी वकीलपत्र दाखल केले. या तिघांनीही बरेच श्रम घेतले. शेवटी खटला जिंकला व सर्वांनाच निर्दोष सोडविण्यात यश आले. अशा संकटाच्या काळी आर्यांच्या (हिंदुच्या) बाजूने लढण्यास केवळ हे तिघेच निघाले. गुंजोटीच्या आर्य समाजाच्या इतिहासात या वकीलत्रयींची कामगिरी फार मोठी व महत्वाची आहे.

इ.स. १९३९ च्या आर्यन् सत्याग्रहात ज्या ध्येयवादी कार्यकर्त्यांनी भाग घेऊन निजामाविरूद्ध सत्याग्रह केला, त्यांनी त्या काळात आपल्या संसाराची, मुलाबाळांची यत्किंचितही तमा न बाळगता सक्रीय भाग घेऊन शिक्षा भोगली. या सत्याग्रहींपैकी आज केवळ तीन -चार लोकच जिवंत आहेत. महाराष्ट्र शासनाने सर्वांनाच सैनिकाचा दर्जा देऊन उचित त्यांचा सन्मान केला आहे. स्वातंत्र्य सैनिक सन्मान पेन्शन देऊन त्या काळी केलेल्या त्यागाचे अंशतः का होईना सहाय्य करून ऋणमुक्त होण्याचा प्रयत्न केला आहे.

पोलीस ॲक्शनमुळे नंतर गावात

thearyasamaj.org

एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना घडली. १७ सप्टेंबर १९४८ पोलीस ॲक्शन मुळे स्वतंत्र हैद्राबाद राज्याचे स्वप्न विरले व हे संस्थान भारतीय संघ राज्यात विलीन झाल्याने इतिहासातून त्याचा उल्लेख पुसला गेला. त्याबरोबरच जवळपास ५० वर्षांपासून चाललेल्या अन्याय, अत्याचार व क्रौर्य यांना तिलांजली मिळाली. त्यामुळे गुंजोटी या सर्वांतून मुक्त झाली. आर्य समाजाच्या त्याग, तपस्या व बलिदानाला एक नवा रंग चढला.

१९४८ साली एक घटना घडली गावच्या मध्यवर्ती स्थानी एक प्रार्थनास्थळ होते.खरे तर मूळतः ते आर्यांचे (हिंदूचे) पौराणिक मंदिर असावे. या जागेवर वक्फ बोर्डाने एक दावा दाखल केला. त्यामुळे आर्य (हिंदू)वर अन्याय झाला. नागरिकांची एक सभा झाली. या संपूर्ण कार्यवाहीची जबाबदारी आर्य समाजाने घ्यावी, असा एकमुखी निर्णय घेण्यात आला. श्री दिगंबरराव देशमुख (स्वामी व्रतानंदजी) यांच्यावर ही जबाबदारी सोपविण्यात आली. आर्य समाजास पुन्हा एक सुवर्णसंधी मिळाली. महानुभाव पंथाच्या मठातून (शिनाई मंदिरातून) आर्य समाज या नवीन व पुरूषार्थाने मिळविलेल्या जागेत स्थिरावले. आनंदभुवन ऐवजी इमारतीचे **आर्य समाज** असे नामकरण झाले.

हा लढा खालच्या कोर्टापासून सर्वोच्य न्यायालयापर्यंत पोहोंचला. प्रत्येक ठिकाणी निकाल वक्फ बोर्डाच्या विरोधात जाऊन आर्य समाजास सर्वोच्च न्यायालयाची मोहोर मिळाली. या लढ्यासाठी येणारा खर्च सुरूवातीस निधी संकलनाद्वारे झाला. पण पुढे सामाजिक स्थित्यंतरामुळे खर्चाची जबाबदारी आर्य समाजावर पडली. आर्य समाजाचीही आर्थिक परिस्थिती सशक्त नव्हती. निराश न होता श्री दिगंबरराव देशमुखांनी एकट्यानी (वैयक्तिक) हा खर्च केला. आर्य समाजास त्यांच्या या योगदाराने कधीही विस्मरण होणार नाही. गावकरीही विसरू शकणार नाहीत. विशेष म्हणजे सर्वोच्च न्यायालयापर्यंत एका ही वकिलाने फीस घेतली नाही. या कार्यात ज्येष्ठ आर्य नेते स्व.कॅप्टन देवरत्नजी आर्य यांचे श्री देशमुख याना बहुमोल सहकार्य लाभले.

आर्य समाजाचा हा स्वाभिमानाचा, पुरूषार्थाचा प्रवास १९३३ पासून आजतागायत अविरत चालू आहे. आर्य समाजाच्या माध्यमाद्वारे कांही तरूणांनी हिंदी रक्षा आंदोलन..व गोरक्षा आंदोलनात भाग घेतला होता. त्यात प्रामुख्याने श्री शिवराज गंगाराम आयनले यांच्या नेतृत्वाखाली सत्याग्रहींनी भाग घेतला होता.

आर्य समाजाच्या माध्यमातून १९८४ पासून १९९६ पर्यंत आर्य कन्या संस्कार शिबिर प्रतिवर्षी घेण्यात येत होते. आर्य समाजाच्या अंतर्गत आर्य कन्या संस्कार प्रतिष्ठानची स्थापना होऊन त्या द्वारे १०० मुलींचे निरनिराळ्या शहरात व गावात

thearyasamaj.org

निवासी शिबिर विनामूल्य घेण्यात आले. पुढे आर्थिक अडचणीमुळे व इतर काही अपरिहार्य कारणामुळे अनिवासी चार शिवीरे घेण्यात आले. पुढे परिस्थितीनुसार प्रतिष्ठान सर्व अधिकारासह महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेत विलीन करण्यात आले. आजतागायत सभेतर्फे मुलींचे शिबिर घेतले जाते. त्यासाठी आर्थिक तरतूदही करण्यात आली आहे. त्याचे प्रमुखपद दिनकर देशपांडे यांच्याकडे आहे.

आर्य समाजाच्या अंतर्गत वेदप्रचार प्रतिष्ठानची स्थापना सर्वश्री राजवीर शास्त्री, प्रियदत्तजी शास्त्री, रमेशजी ठाकूर, काशीनाथराव कदेरे व अन्य सदस्यांच्या प्रयत्नांने प्रतिवर्षी ३ दिवसीय कार्यक्रम संपन्न होत असे. परंतु पुढे प्रियदत्तजी शास्त्री व राजवीरजी हे दोघेही पुरोहित म्हणून हैद्राबाद व सोलापूर येथे योगदान देत असल्याने हे कार्य खंडित झाले.

जवळ जवळ चार - पाच वर्षापासून हिवाळ्यात असहाय्य व गरजू लोकांना जात, धर्म, प्रांत या पलिकडे जाऊन ५० ब्लॅकेटस् चे वाटप होते. हरियाणाचे गोयल हे कारखानदार श्री प्रियदत्तजींच्या माध्यमातून गुंजोटी आर्य समाजाकडे ब्लॅकेट्स देतात व त्याप्रमाणे त्यांचे वाटप केले जाते.

आजही साप्ताहिक संत्संग, पर्व व उत्सव साजरे होतात. तसेच आर्य समाजाच्या माध्यमातून गावात व परिसरात सर्व तऱ्हेचे आवश्यक इच्छेनुसार संस्कार संपन्न केले जातात.

अलिकडील काळात आर्य समाजाच्या इमारतीची पडझड झाली. १९९३ भूकंपात या ऐतिहासिक भवनाला तडा गेला. त्यामुळे आर्यसमाजात कार्यक्रम घेणे कठिण झाले होते. या क्रांतिकारी आर्य समाजाची दुरवस्था पाहून या परिसरातील व्रतस्थ समाजसुधारक पू. स्वामी श्रद्धानंदजी यांचे मन हेलावले. त्यांच्या मनात नेहमीच आर्य समाजाच्या इमारतीचे जीर्णोद्धारकार्य व्हावे, असे विचार येत असत. आपल्या अंतकरणातील ही पवित्र ईच्छा त्यांनी प्रांतीय सभा व गुंजोटी परिसरातील आर्य कार्यकर्त्यांसमोर व्यक्त केली.तेंव्हा या सर्वांनी मिळून या आर्य समाजाच्या जीर्णोद्धाराचा संकल्प सोडला. सभेच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिती स्थापन झाली आणि निधी संकलनासाठी सर्वजण कामाला लागले.धैर्यधुरंधर आर्य कार्यकर्ते डॉ. ब्रह्ममुनिजी यांच्या निर्देशनाखाली जवळपास दीड वर्षापूर्वी कार्याला सुरूवात झाली. पुण्याहून कर्मठ आर्य समाजी श्री लखमसीभाई वेलानी यांनी भरगच्च निधी पाठवला. संभाजीनगरहून ज्येष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री दयाराम बसैये बंधू यांनीही मोठी मदत केली. स्वामी श्रद्धानंदांचे शिष्य, डॉ. ब्रह्ममुनिजींच्या संपर्कातील सज्जन, गावातील व परिसरातील धर्मप्रेमी नागरिक, गुरूकुलाचे स्नातक, सभेचे पदाधिकारी व आर्यजनांनी आपआपल्या कुवतीप्रमाणे यथाशक्ती

thearyasamaj.org

आहुती दिली आणि पाहता-पाहता आर्य समाज गुंजोटीच्या नव्या इमारतीचे बांधकाम पूर्ण झाले. आता उद्घाटन कार्यक्रमांसह भव्य प्रमाणात वेदप्रचार बलिदान समारोह व इतर कार्यक्रम येत्या दि. २४, २५ व २६ नोव्हेंबर २०१४ रोजी आयोजित करण्यात आले आहेत. यानिमित्त आर्य जगताचे प्रसिद्ध विद्वान, तपस्वी संन्यासी व राज्यातील अनेक ठिकाणचे आर्य कार्यकर्ते गुंजोटी गावात येत आहेत. या ऐतिहासिक सोहळ्यानिमित्त सर्वांचे अभिनंदन !

(संदर्भ - साधना सेवा समिती द्वारे प्रकाशित 'दिव्यत्वाची प्रचिती - गुंजोटी' ग्रंथातून संपादित लेख.)

लेखक महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे माजी मंत्री आहेत.

- प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन निबंध स्पर्धा

सौ. तारादेवी व श्री प्रा.डॉ.जयप्रकाशजी मुंदडा गौरव

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१४

विषय :- "स्वामी दयानंद व अंधश्रद्धा निर्मूलन"

- निबंध पाठविण्याची अंतिम तारीख ३१ डिसेबंर २०१४-

* या स्पर्धेत केवळ माध्यमिक विद्यालयाच्या (८,९,१० वी) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
* स्पर्धकास आपला निबंध २००० शब्दमर्यादिपर्यंत पाठविता येईल. ग्रंथातील मजकूर चालणार नाही.
* निबंधासोबत स्पर्धकांनी मुख्याध्यापकाचे किंवा आर्य समाजाचे पत्र व शाळेचे ओळखपत्र जोडावे.
* परीक्षकांचा निर्णय सर्व स्पर्धकासाठी पूर्णतःबंधनकारक राहील.
* मागील वर्षीच्या विजेत्या स्पर्धकांनासुद्धा या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

सौ.डॉ.विमलादेवी व श्री प्रा.डॉ.सु.ब.काळे (ब्रह्ममुनिजी) गौरव

१) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१४

विषय :- "महर्षी दयानंदांचे सामाजिक विचार"

- निबंध पाठविण्याची अंतिम तारीख ३१ डिसेबंर २०१४-

* या स्पर्धेत कनिष्ठ व वरिष्ठ महाविद्यालय (११ वी ते पदवी व बी.एड) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
* स्पर्धकास आपला निबंध ३००० शब्दमर्यादिपर्यंत पाठविता येईल. ग्रंथातील मजकूर चालणार नाही.
* निबंधासोबत स्पर्धकांनी मुख्याध्यापकाचे किंवा आर्य समाजाचे पत्र व शाळेचे ओळखपत्र जोडावे.
* परीक्षकांचा निर्णय सर्व स्पर्धकासाठी पूर्णतःबंधनकारक राहील.
* मागील वर्षीच्या विजेत्या स्पर्धकांनासुद्धा या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

- * वरील दोन्हीं स्पर्धांचे निबंध पाठवण्याचा पत्ता *-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज,परळी-वै.४३१५१५ जि.बीड

thearyasamaj.org

परोपकारिणी सभेची स्थापना

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

स्वामीजींनी आपल्या योगज्ञानाच्या बळावर शक्यतोवर हे जाणले होते की 'आता ते अधिक काळ जगू शकणार नाहीत आणि कदाचित लवकरच त्यांना आपली जीवनयात्रा संपवावी लागेल.' त्यांच्या हे ही लक्षात आले होते की, 'आर्य समाजाच्या रूपाने त्यांनी एका अशा शक्तिशाली संघटनेची स्थापना केलेली आहे, जी की त्यांच्या मृत्युनंतर ही वैदिक धर्म व आर्य संस्कृतीच्या प्रचार व प्रसारकार्यात नेहमी दृढ संकल्पयुक्त राहील.' तरी देखील ते आपल्या स्वतःने लिहिलेल्या ग्रंथांच्या मुद्रण-प्रकाशन, अनाथ- विधवांचे संरक्षण तसेच सर्व देशांमध्ये व बेटांमध्ये वैदिक धर्मांच्या भावी प्रचारकार्याची योग्य दिशा ठरविण्यासाठी अशी एक सभा (संस्था) स्थापू इच्छित होते की जिच्यावर त्यांना आपल्या ग्रंथांचा व मुद्रणालयाचा भार सोपवून अगदी निश्चिंत राहता येईल. ही गोष्ट ध्यानात घेऊन त्यांनी उदयपुरचे महाराणा सज्जनसिंह यांच्या अध्यक्षतेखाली परोपकारिणी सभेची स्थापना केली व अध्यक्षांसह एकूण २३ सभासदांना तिचे सदस्य म्हणून निवडले. नंतर एक अधिकारपत्र लिहून त्यांनी आपल्यानंतर या सभेला आपल्या ग्रंथांचे व वैदिक मुद्रणालयाचे सर्व अधिकार देत स्वायत्त करण्यासाठीची वैज्ञानिक मुभा प्रदान केली. मेवाडच्या कांही राजेमंडळींव्यतिरिक्त सर्वश्री महादेव गोविंद रानडे, गोपाळराव हरी

thearyasamaj.org

देशमुख, संस्कृतचे विद्वान पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, मेरठचे लाला रामशरणदास, फर्रूखाबादचे शेठ दुर्गाप्रसादजी इत्यादी अनेक चांगल्या व्यक्तींना या सभेत घेतले व सभासद बनविले. स्वामीजींनी आपल्या मृत्युनंतर अंतिम संस्काराचा अधिकार देखील या सभेस प्रदान केला. परोपकारिणी सभेचे मंत्रीपद कविराज श्यामलदास यांच्याकडे, तर उपमंत्रीपद मेवाडच्या कौंसिलचे सदस्य पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या यांच्याकडे सोपविले ही गोष्ट ज्ञात असावी की स्वामीजींच्या देहावसानानंतर याच श्री पंड्या यांनी अजमेरला जाऊन स्वामीजींच्या ग्रंथांना व इतर संग्रहित पुस्तकांना आणि वैदिक मुद्रणालय चालविण्यासाठी जमविलेल्या धनाला आपल्या अधिकारात घेतले होते.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

- प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्व स्पर्धा

पू. पिताश्री स्व. विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१४

विषय :- 'महर्षी दयानंदाचे मानवतेचे विचार'

रविवार, दिनांक ३० नोव्हेबंर २०१४, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, किल्ले धारूर जि. बीड

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य.विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. २७ नोव्हबंर २०१४ पर्यंत स्पर्धेचा नोंदणी करावी.
५) पारितोषिके - १) रू. १५००, २) रू. ११००, ३) रू. ७७५, रू. १००चे वैदिक साहित्य

सौ कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

२) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१४

विषय :- 'महर्षी दयानंदाचे राष्ट्रीय विचार'

रविवार, दिनांक २१ डिसेंबर २०१४, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, कस्तुरबा मार्केट, सोलापुर

१) या स्पर्धेत ११ वी ते पदवी वर्गापर्यंत शिकणाऱ्या महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. १५ डिसेंबर २०१४ पर्यंत स्पर्धेचा नोंदणी करावी.
५) पारितोषिके - १) रू. २०००, २) रू. १५००, ३) रू. १०००, रू. १०० चे वैदिक साहित्य

thearyasamaj.org

राज्यात चार नव्या आर्य समाजांची स्थापना

वेदांचे मानव कल्याणकारी विचार तळागळातील जनतेपर्यंत पोहोचविण्याच्या उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने मराठवाड्यात चार ठिकाणी नव्याने आर्य समाजांची स्थापना करण्यात आली आहे. या आर्य समाजांच्या स्थापनेचा जाहीर कार्यक्रम त्या-त्या गावी मोठ्या उत्साहात संपन्न झाला.यानिमित्त यज्ञ, भजनसंगीत आणि व्याख्यानांचे आयोजन करण्यात आले.

१) आर्य समाज, मानवत -

परभणी जिल्ह्यात तालुक्याचे ठिकाण म्हणून सुपरिचित असलेल्या **मानवत** येथे सामाजिक कार्यकर्ते श्री गणेश गांवडे यांच्या घरी दि.१७ ऑगस्ट रोजी आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. परळीचे प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्याखाली विशेष यज्ञ संपन्न होऊन त्यांचे मौलिक विषयावर व्याख्यान पार पडले. यावेळी कवयित्री सौ. लीलावती जगदाळे व वैद्य बाबुराव आर्य यांनी भजन सादर केले. परभणीचे ज्येष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री विजयकुमार गुप्ता यांनी ही यावेळी मार्गदर्शन केले. बालकिशनजी बिर्लाजी, राजेन्द्र जगदाळे ादी मान्यवरांच्या उपस्थितीत हा कार्यक्रम पार पडला यावेळी गावंडे परिवारातील नातेवाईक, पाहुणे तसेच गावातील प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित होते.

२) आर्य समाज, सारडगांव

परळी तालुक्यातील वृक्षवल्लींची नैसर्गिक देणगी लाभलेल्या सारडगांव येथे दि. ३ ऑगस्ट रोजी सामाजिक कार्यकर्ते श्री भागवतराव आघाव गुरूजी यांच्या निवासस्थानी आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. प्रारंभी श्री नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न झाला. त्यानंतर पं. ब्रह्मनादमुनिजी यांनी ईश्वरभक्तिपर भजन सादर केले तर कु.रोहिणी व चि. सोमनाथ आघाव या बहीण-भावांनी प्रेरणाप्रद गीतगायन केले. भजने सादर केली त्यानंतर श्री लक्ष्मणराव आर्य व डॉ. ब्रह्ममुनिजी यांनी धार्मिक व आध्यात्मिक विषयावर मार्गदर्शन करून समाजाच्या नवनिर्मितीसाठी आर्य समाजाच्या आवश्यकतेवर भर दिला. यावेळी गावातील सर्वश्री त्र्यंबक महाराज, भीमराव महाराज, सोपान मास्तर, प्रल्हाद घुले आदी वारकरी विचारांचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते, आप्तेष्ठ नातेवाईक, परळी गुरूकुलातील वानप्रस्थी आदी उपस्थित होते.

३) आर्य समाज, मांडवा

परळी तालुक्यातील मांडवा येथे दि. ११ ऑगस्ट रोजी डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी यांच्या अध्यक्षतेखाली झालेल्या कार्यक्रमात

thearyasamaj.org

आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. प्रारंभी श्रावणी निमित्त यज्ञ करण्यात आला. नंतर भजनसंगीत व प्रवचनाचा कार्यक्रम पार पडला. श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी यांनी मान्यवरांचा परिचय करून दिला. त्यावेळी सर्वश्री लक्ष्मण गुट्टे गुरूजी, श्रीधर गुट्टे गुरूजी, शिवदास नागरगोजे, दिगंबर फड, श्रीहरी मुंडे, गंगाधर कोटंबे, रंगनाथ तिवार आदि मान्यवर उपस्थित होते.

४) आर्य समाज, गांजुर

लातूर जिल्ह्यातील चाकूर तालूक्याच्या गांजूर या गांवी दि. ३१ ऑगस्ट रोजी प्रांतीय सभा पदाधिकाऱ्यांच्या व लातूर, परळी, शिवणखेड, सुगांव आदी ठिकाणच्या आर्यजनांच्या उपस्थितीत आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. गावकऱ्यांच्या अपूर्व उत्साहामुळे हा कार्यक्रम ऐतिहासिक ठरला. शिवणखेडचे आर्य कार्यकर्ते श्री व्यंकटराव कुल्ले यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडलेल्या जाहीर कार्यक्रमात सर्वश्री पू. स्वामी श्रद्धानंदजी, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, राजेंद्रजी दिवे, लक्ष्मणराव आर्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य आदींनी मार्गदर्शन केले. भजनोपदेशक पं. प्रतापसिंह चौहान यांनी मधुर भजने सादर केली.

याच कार्यक्रमात गावातील दानशूर प्रतिष्ठित कार्यकर्ते श्री बाबासाहेब पाटील यांनी आर्य समाजाच्या भवनासाठी स्वतःच्या मालकीची दोन गुंठे जमीन दान करून समाजासमोर एक उच्च आदर्श ठेवला. तसेच गावकऱ्यांनी भवन बांधकामासाठी निधींची घोषणा केली. कार्यक्रमात जवळपास दीड लाख रूपयांचा निधी जमा झाला.

वैदिक विचारांचा प्रसार व्हावा, या एकाच विचारांनी भारावलेले तळमळीचे जुने कार्यकर्ते श्री लक्ष्मणराव कारनाळे यांच्या उत्कट इच्छेची फलश्रुती म्हणजे हा सोहळा ठरला. यावेळी श्री कारनाळे यांच्यासह वरील दानदात्यांचा भावपूर्ण सत्कार करण्यात आला. या प्रभावशाली कार्यक्रमामुळे परिसरात उत्साहाचे वातावरण निर्माण झाले होते. गावकऱ्यांनी एकत्र येऊन आर्य समाजाची जाहीर स्थापना करण्याचा अलिकडील काळातील हा ऐतिहासिक दिवस मानला जातो. शेजारील शिवणखेड गावच्या सर्वश्री बब्रुवाहन शिंदे, कुल्ले, आरदवाड आदी कार्यकर्त्यांच्या प्रेरणेने तसेच गावचे सरपंच लालासाहेब शिंदे, बाबासाहेब पाटील, आदर्श शिक्षक एन.डी.बावचे सर, नानासाहेब पाटील, ॲड. सुरेश शिंदे, भागवत शिंदे, कुंडलिक पाटील, आबासाहेब पाटील आदींनी हा कार्यक्रम यशस्वी केला. सूत्रसंचलन श्रीकिशनराव शिंदे व कु. मोहीनी कदम यांनी केले.

या नूतन आर्य समाजाच्या विकास-वाटचालीसाठी हार्दिक शुभेच्छा !

(वरील चारही नव्या आर्य समाजांची कार्यकारिणी पुढील अंकात प्रकाशित करण्यात येईल.)

thearyasamaj.org

वार्ता विशेष आर्य समाज बिबराळचे पुर्नगठण

बिबराळ ता. शिरूर अनंतपाळ, जि. लातूर येथे १९८२ मध्ये आर्यसमाजाची स्थापना झाली होती. मात्र पुढील काळात बरीच वर्षे त्याचे कार्य जवळपास बंदच होते. आर्य समाजाच्या जागेवर अतिक्रमणही झाले होते. हे अतिक्रमण दूर करून संदर जागा आर्यसमाजाच्या ताब्यात येण्यासाठी बिबराळचे काही युवा कार्यकर्ते प्रयत्नशील होते. या कामी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी, मंत्री राजेंद्र दिवे व लातूरचे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रा. ओमप्रकाशजी होळीकर यांचे बहुमोल सहकार्य लाभले. यांच्या पुढाकाराने आर्य समाज बिबराळचे पुर्नगठण होऊन प्रधान श्री काशीनाथराव जाधव, मंत्री श्री हणमंतराव पाटील, उपप्रधान - श्री देवानंद निटूरे, कोषाध्यक्ष श्री विनोद जाधव असे पदाधिकारी निवडले गेले.

दि. १४ जुलै ला नियोजित वास्तूचे भूमिपूजन यज्ञाचे पौरोहित्य लातूर येथील आर्य समाज रामनगरचे मंत्री पं. ज्ञानकुमार आर्य यांनी केले. यज्ञ व भूमिपूजनानंतर सत्काराचा कार्यक्रम पार पडला. यात प्रतिनिधी सभेच्या पदाधिकाऱ्यांसह आर्यसमाज बिबराळचे पदाधिकारी, गावचे सरपंच श्री नंदुसिंह ठाकुर, तंटामुक्त समितीचे अध्यक्ष श्री महावीर जाधव,आर्यसमाज बिबराळचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते सर्वश्री बाबुराव पाटील (जाधव), नारायणसिंग ठाकूर, रामसिंग ठाकूर, मोतीराम कांबळे, पत्रकार राजकुमार सोनी, निटूरचे कार्यकर्ते श्री प्रल्हादराव मानकोसकर, उजेडचे बिराजदार, गावकरी बाबुद्दीन शेख, सभेचे उपदेशक पं. सुधाकर शास्त्री, पुरोहित श्री ज्ञानकुमार आर्य या सर्वांचा सत्कार केला गेला. याशिवाय काही मुस्लिम बांधवांचाही सत्कार करण्यात आला सत्कारानंतर सर्वश्री डॉ. ब्रह्ममुनीजी, राजेंद्र दिवे, प्रा. ओमप्रकाश होळीकर, पं. सुधाकर शास्त्री व पं. ज्ञानकुमार आर्य यांची मार्गदर्शनपर भाषणे झाली.

शिवणखेड येथे श्रावणी कार्यक्रम उत्साहात

शिवणखेड (ता. चाकूर, जि. लातूर) येथील **श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम** दि. १० ते १७ ऑगस्ट दरम्यान उत्साहात संपन्न झाला. पं. राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर) यांची मराठी भाषेतील रसाळ व मधुर व्याख्याने ऐकून श्रोते प्रभावित झाले. बरेली (उ.प्र.) येथून खास आमंत्रित आर्य भजनोपदेशक पं. विमलदेवजी अग्निहोत्री यांच्या संगीतमय वेदोपदेशाची श्रोत्यांवर चांगलीच छाप पडली श्री भूपेन्द्र आर्य यांनी त्यांना तबल्यावर उत्तम साथ दिली. गेल्या ४ वर्षापासून उद्घाटनाच्या प्रतीक्षेत

thearyasamaj.org

असलेल्या शिवणखेड आर्य समाजाच्या नव्या भवनात दररोज सकाळी ७ ते ११ सामूहिक संध्या वेदपारायण यज्ञ, भजनोपदेश व प्रवचने, दुपारी २ ते ४ शंकासमाधान व रात्री ८ ते ११ वा. भक्तिसंगीत व व्याख्याने असे कार्यक्रम चालले. कार्यक्रमांमुळे गाव व परिसरातील लोकांना आर्य समाज व वैदिक सिद्धांतांविषयी आवड निर्माण झाल्याचे दिसून आले.

हा श्रावणी कार्यक्रम सफल करण्यासाठी प्रधान विजयपाल कुल्ले, मंत्री बभ्रुवाहन शिंदे, कोषाध्यक्ष भगवान आरदवाड, ज्येष्ठ कार्यकर्ते व्यंकटराव कुल्ले यांसह सर्वश्री विद्यासागर आरदवाड, चंद्रकांत कुल्ले, आबासाहेब शिंदे, पंढरीनाथ चामे, धनंजय शिंदे, महादेव आरदवाड, रघुनाथ तेलंगे, किशनराव शिंदे, बाबुराव चामे, गंगाराम तेलंगे आदींनी परिश्रम घेतले यानंतर सुगांव येथे श्री अशोकराव कातपुरे यांच्या घरी वेदप्रचार कार्यक्रम पार पडला

करडखेल येथे वेदप्रचार कार्यक्रम

करडखेल (ता. उदगीर)येथे स्वा.सै. आनंदमुनिजी व श्री भगवानराव देशपांडे यांच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज सक्रिय आहे. यावर्षी दि. १८ व १९ ऑगस्ट रोजी श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम पार पडला आर्य समाजाच्या सभागृहात सकाळी होम-हवन, भजन, प्रवचन तर रात्री ही प्रबोधन पर कार्यक्रम पार पडले. डॉ. नयनकुमार आचार्य यांनी 'वेदांची विचारसरणी मानवी जीवनाच्या सर्वांगिण कल्याणासाठी उपयुक्त असल्याने तिचा गावकऱ्यांनी स्वीकार करावा,' असे आवाहन व्याख्यानांतून केले, तर पं. प्रतापसिंहजी चौहान यांनी भजनांच्या माध्यमातून 'जीवन सद्गुणांनी पवित्र करण्याचा' उपदेश केला. स्थानिक जि.प.शाळेत ही विद्यार्थी व अध्यापकांसाठी प्रबोधनपर कार्यक्रम पडले, तर स्वा.सै. आनंदमुनिजींतर्फे शाळेतील गरीब, होतकरू, गुणवंत विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक साहित्यांचे वितरण करण्यात आले.

औराद (श.) येथे श्रावणीनिमित्त 'मासिक सत्संग'

औराद शहाजानी येथील आर्य समाजाने गेल्या कांही वर्षापासून श्रावणात महिनाभर चालणाऱ्या पारिवारिक संत्संगाची परंपरा अखंडितपणे सुरू ठेवली आहे. याही वर्षी दि. २७ जुलै ते २४ ऑगस्ट दरम्यान दररोज सकाळी ७ ते ९ व सायंकाळी ५ ते ७ या दोन वेळात सर्वश्री पं. वैजनाथअप्पा करकेले, पं. प्रकाशसिंह कच्छवा, पं. गोपाळराव शिंदे, यांच्या नेतृत्वाखाली जवळपास ५६ कुटुंबांमध्ये यज्ञ, भजन व प्रवचनांच्या माध्यमाने पारिवारिक सत्संग पार पडले. या कार्यक्रमांना यजमानांकडून भरभरून प्रतिसाद मिळाला व त्या-त्या घरांमध्ये वैदिक विचारांचा प्रसार होण्यास

thearyasamaj.org

मदत मिळाली.

वेदप्रचाराचा जाहीर मुख्य कार्यक्रम दि. १८ ऑगस्ट ते २४ ऑगस्ट दरम्यान आर्य समाजात संपन्न झाला. यावर्षी वैदिक व्याख्याते म्हणून सभेतर्फे प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कमलनारायणजी आचार्य (रायपुर) यांना तर भजनोपदेशक म्हणून पं. अमरेशजी आर्य (मुजफ्फरनगर) यांना पाठविण्यात आले होते. या दोन्ही विद्वानांनी आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक विषयांना अनुसरून विविध विचार मांडले. सकाळी वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन तर रात्री व्याख्यानांचे कार्यक्रम पार पडले. कार्यक्रमासाठी प्रधान गोविंदराव भिंगोले, मंत्री भरत बियाणी, कोषाध्यक्ष दीपक चांडक यांच्यासह पदाधिकाऱ्यांनी परिश्रम घेतले.

शोक वार्ता

स्वा.सै.किशनराव जाधव यांचे निधन

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्राम व गोवा मुक्ती संग्रामात सहभागी औराद (गुं.) येथील वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ते स्वा.सै. श्री किशनराव नरसिंगराव जाधव यांचे दि. २८ ऑक्टोंबर २०१४ रोजी निधन झाले. मृत्युसमयी ९८ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे एक भाऊ, दोन मुले व २ मुली असा परिवार आहे. एक सुपुत्र श्री रमेश जाधव हे महाराष्ट्र परिवहन महामंडळात उच्च पदावर तर दुसरे सुपुत्र प्रा.डॉ. विठ्ठलराव जाधव हे कळंब येथील मोहेकर महाविद्यालयातील रसयानशास्त्र विभागात वरिष्ठ अधिव्याख्याते म्हणून कार्यरत आहेत.

श्री जाधव हे अगदी लहान वयातच राष्ट्रकार्यात सहभागी झाले. आपल्यापेक्षा वयाने मोठे असलेल्या सहकाऱ्यांसमवेत राहून त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य आंदोलनात उडी घेतली. त्यामुळे त्यांना गुलबर्गा येथील कारागृहात ६ महिण्याची जेल भोगावी लागली. कांही काळ त्यांनी भूमिगत राहून कार्य केले. हिंदी सत्याग्रहात देखील ते सहभागी झाले. या दरम्यान ते कांही महिने अंबाला येथील तुरूंगावासात राहिले.

अलीकडील काळात औराद या आपल्या जन्मभूमीत शेतीव्यवसायासोबत आर्य समाजाच्या कार्यात ते सहभागी होत असत. महर्षी दयानंदांच्या वैदिक विचाराचे अनुयायी म्हणून त्यांची ओळख होती.

दिवंगत स्वा.सै.श्री जाधव यांच्या पार्थिवावर पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. स्थानिक आर्य कार्यकर्ते श्री रघुरामजी गायकवाड (गुरूजी) श्री गुणवंतराव पाटील, परळीचे वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी यांच्या पौरोहित्याखाली हा अंत्यसंस्कार संपन्न झाला. याप्रसंगी शासनाचे प्रतिनिधी परिसरातील प्रतिष्ठित नागरिक, आर्य कार्यकर्ते व आप्तेष्ठ उपस्थित होते.

thearyasamaj.org

श्री आर्यमुनिजी (घुन्नर) यांना पत्नीशोक

हदगांव जि. नांदेड भागातील वेदप्रचारक श्री आर्यमुनिजी (श्री विठ्ठलराव घुन्नर गुरूजी) यांच्या धर्मपत्नी सौ. चंद्रभागाबाई यांचे दि. २९ ऑक्टोबर २०१४ रोजी रात्री ९ वा. प्रदीर्घ आजाराने दुःखद निधन झाले. त्या ६७ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात् पति, एक मुलगा, ६ मुली, जावई व नातू-नाती असा विशाल परिवार आहे.

श्रीमती चंद्रभागाबाई या गेल्या कांही वर्षापासून किडनी व वातविकाराने आजारी होत्या. त्यांच्यावर नांदेड, औरंगाबाद, परळीत उपचार करण्यात आले. चंद्रभागाबाई या धार्मिक, श्रद्धाळू व सात्विक स्वभावाच्या होत्या. बालपणापासून त्या मेधाविनी होत्या. शाळेत न जाताही घरी राहुनच त्या प्रयत्नपूर्वक शिकल्या व त्यांनी अनेक धार्मिक ग्रंथांचे वाचन केले. एक महिला असून ही धाडसी स्वभाव व कणखर वृत्ती हे गुण त्यांच्यात जन्मजात होते. प्रतिदिनी त्या ओ३म् या प्रणवनामाचा जप करीत असत. शिक्षक पदावरून निवृत्त झालेले आपले पति श्री विठ्ठलराव घुन्नर यांना वानप्रस्थी होण्यास त्यांनी सहर्ष संमती दिली होती. त्यामुळेच श्री घुन्नर हे **आर्यमुनी** बनून वेदप्रचार कार्यात संलग्न झाले. परळीच्या गुरूकुल आश्रमात राहुन अध्यापन, सेवा व साधनाकार्यात ते सहभागी होत. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले. परळी आश्रमाचे श्री विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, लक्ष्मणराव आर्य आदींच्या उपस्थितीत नंतर शांतियज्ञ संपन्न झाला.

चि. राहुल बाबशेट्टी यांचे देहावसान

आर्य समाज औराद (गुंजोटी) चे मंत्री राजेंद्र पाटील यांचे भाच्चे चि. राहुल बसवराज बाबशेट्टी यांचे दि. ११ ऑक्टोबर रोजी पहाटे वयाच्या अवघ्या २४ व्या वर्षी दुर्दैवी निधन झाले.गेल्या कांही वर्षापासून ते मेंदुज्वराने आजारी होते. अविवाहित असलेल्या राहुल यांच्या मागे आई, भाऊ, बहीण असा परिवार असून ते श्री विज्ञानमुनिजींचे नातू (कन्यापुत्र) होते. लहानपणी राहुल हे परळीतील गुरूकुल आश्रमात शिक्षणास होते. अल्पवयात जीवनाची यात्रा संपविलेल्या कुमारवयीन चि.राहुलच्या निधनांमुळे सर्वत्र हळहळ व्यक्त होत आहे. त्यांच्या पार्थिवावर खजुरी ता.आळंद या मूळगांवी शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

तिन्हीं दिवंगत आत्म्यांच्या शांती व सद्‌गतीसाठी प्रार्थना व भावपूर्ण श्रद्धांजली

thearyasamaj.org

पुरानी आर्य समाज का पुनर्गठन -बिबराल (जि. लातूर)

हैदराबाद संग्राम कालीन पुरानी आर्य समाज , बिबराल के नये भवन की आधारशिला रखते हुए सर्वश्री भास्कर जाधव, बाबुराव जाधव, राजेन्द्र दिवे, ठाकुर, हनुमंत जाधव, प्रो.होलीकर ।

नये आर्य समाज भवन के स्थान पर पं. ज्ञानकुमारजी आर्य के पौरोहित्य में आयोजित भूमियज्ञ में यजमान दम्पती, आर्यजन, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, प्रो. होलीकजी आदि ।

आर्य समाज, जालना में आचार्या डॉ.नंदिताजी ।

आर्ष कन्या गुरूकुल, वाराणसी की विदुषी आचार्या डॉ. नंदिताजी शास्त्री ने महाराष्ट्र की प्रसिद्ध आर्य समाज, जालना को भेंट दी । आर्यजन, अध्यापक व अध्यापिकाओं के साथ में आचार्या व ब्रह्मचारिणियां ।

thearyasamaj.org

चलो गुंजोटी ! ॥ ओ३म् ॥ हु. वेदप्रकाश अमर रहें !

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति के द्वारा गुंजोटी में आयोजित

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी आर्य युवा बलिदानी

- हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान समारोह -

आर्य समाज गुंजोटी भवन जीर्णोद्धार व उद्‌घाटन समारोह

- यजुर्वेद पारायण यज्ञ व विविध कार्यक्रम -

दि. २४, २५, २६ नवम्बर २०१४ (सोम, मंगल, बुधवार)

*** आमन्त्रित मार्गदर्शक विद्वान ***

* पू. आचार्य स्वामी बलदेवजी (प्रधान, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* मा. श्री प्रकाशजी आर्य (मन्त्री, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* पू. श्री स्वामी धर्मानन्दजी (प्रमुख, गुरूकुल आमसेना,उडीसा)
* मा.प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु (आर्य इतिहास गवेषक, अबोहर -पंजाब)
* मा.प्रो.डॉ. धर्मवीरजी (का.प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर)
* मा.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य (आर्य भजनोपदेशक, नागपुर)
* मा.पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री (आर्य भजनोपदशेक बरेली-उ.प्र.)

इस त्रीदिवसीय समारोह में आप सभी भारी संख्या में आंमन्त्रित हैं । पधारकर कार्यक्रमों को सफल बनावें !

विनीत

स्वामी श्रद्धानन्द अध्यक्ष, **डॉ. ब्रह्ममुनि** उपाध्यक्ष, **काशिनाथ कदेरे** सचिव, **म्हाळप्पा दुधभाते** सहसचिव, **उग्रसेन राठौर** कोषाध्यक्ष, **दिनकरराव देशपांडे** प्रधान व अन्य

आर्य समाज, गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति (म. आर्य प्र. सभा अन्तर्गत)

डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधवराव देशपांडे (मंत्री), उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली-वैजनाथ

Reg.No.RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,

श्री ______________________

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समजा, परली वैजनाथ-४३१५१५
जि.बीड (महाराष्ट्र)